Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

महाभोज : पात्र योजना

सुरज्ञान चौधरी

नेट, जे.आर.एफ.
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

शोध – संक्षेप :

महाभोज मन्नू भण्डारी जी द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें लेखिका ने समकालीन सभी राजनीतिक दावपेचो एवं प्रजातंत्र में पनप रही स्वार्थ नीति की सुन्दर व्यंजना की है। उपन्यास में अपराध व राजनीति के गठजोड़ को बहुत ही यर्थाथवादी दृष्टि से दिखाया है।

महाभोज उपन्यास का कथानक राजनीति के बदलते हुए परिवेश पर आधारित है। उपन्यास का प्रारम्भ सरोहा गाँव की आगजनी की घटनाओं से होता है। उपन्यास में भण्डारी जी ने घटना को लेकर किस प्रकार राजनीति होती है, उसका बड़ा ही सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन किया है।

मनोवैज्ञानिक विषयों जो अत्यन्त सूक्ष्मता से पाठको के समक्ष रखने के लिए मन्नू भण्डारी जी नवलेखन के दौर से जुड़ी है। प्रस्तुत शोध में पात्रों के परिचयात्मक अध्ययन से राजनीतिक षड़यन्त्र, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण को जानने की कोशिश करेंगे।

प्रस्तावना :

महाभोज उपन्यास में कई महत्वपूर्ण पात्र है जो अलग–अलग राजनीतिक और सामाजिक भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुख्य पात्रों में दा साहब, सुकुल बाबू, बिसेसर, हीरा आदि प्रमुख है।

प्रमुख पात्र :

बिससेर : न्यायप्रिय, स्वाभिमानी, निर्भीक व शिक्षित व्यक्ति हरिजनों का हमदर्द।
दा साहब : सत्ताधारी पार्टी के मुख्यमंत्री, सत्तालौलुप, भ्रष्टाचारी
सुकुल बाबू : पूर्व मुख्यमंत्री, विपक्षी दल के नेता
बिंदा : उग्र, निर्भीक, उत्साही व जागरूक पात्र
हीरा : बिससेर का पिता, गरीब व दलित व्यक्ति
जोरावर : दा साहब का सहयोगी, गांव का जमींदार, गुण्डा व हत्यारा
लखन सिंह : सत्ताधारी पार्टी के उम्मीदवार, दा साहब के वफादार
लौचन भैया : सत्ताधारी पार्टी के असन्तुष्ट विधायकों के नेता।
दत्ता बाबू : 'मशाल' समाचार पत्र के सम्पादक।
सक्सेना : एस.पी. (पुलिस अधिकारी)
सिन्हा : डी.आई.जी. (पुलिस अधिकारी)
सदाशिव अत्रे: सत्ताधारी पार्टी के अध्यक्ष
रूकमा : बिदा की पत्नी, चरित्रवान ग्रामीण महिला।
जमना बहन : दा साहब की पत्नी।

ये पात्र भारतीय राजनीति में व्याप्त अवसरवादिता, भ्रष्टाचार और अवसर वादिता को दर्शाते है। उपन्यास में पात्रों के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाने की कोशिश की है कि किस तरह राजनीति और अपराध एक दूसरे से जुड़े हुए है और किस तरह सत्ता के उपयोग के लिए किसी भी हद तक जा सकते है।

उपन्यास का कथानक बिसेसर की मृत्यु की घटना के आस–पास चुना है। बिसेसर एक मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार व्यक्ति है। वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने में पीछे नहीं हटते है।

उपन्यास में हरिजन बस्ती में आगजनी की घटना व उस हत्याकाण्ड के प्रमाण बिसू के पास है। जिन्हें वह दिल्ली जाकर सक्षम अधिकारियों को सौपना चाहते है और बस्ती के लोगों को न्याय दिलवाना चाहते है। किन्तु राजनीतिक षड़यन्त्र के तहत उसे चाय में जहर देकर मार दिया जाता है। बिसू की मौत के बाद उसका साथी बिंदा उसके लिए संघर्ष करता है। लेकिन उसे भी राजनीतिक जाल में फंसाकर जेल में डाल दिया जाता है।

बिंदा व बिसू के माध्यम से भण्डारी जी ने पिछड़ी और वंचित जाति के लोगों के साथ अत्याचार, शोषण को दिखाने का प्रयास किया है। उपन्यास में दा साहब जैसे घटिया नेताओं के वर्चस्व को देखकर बिदा अपने मित्र बिसू से कहता है ''जब सरकार ही सारी बात को ढाब–ढाँक रही है तो तेरे–मेरे भागदौड़ करने से क्या होगा? जैसी यहाँ की सरकार वैसी दिल्ली की सरकार''[1]।

दा सहाब उपन्यास में प्रमुख पात्र है जो एक चालाक व सत्ता लौलूप राजनेता के रूप में सामने आते हैं। दा साहब मुख्यमंत्री पद का दुरूपयोग करते हुए भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते है। वे राजनीति में रहते हुए किसी भी सिद्धान्त व नैतिकता का पालन नहीं करते।

दा साहब का चरित्र उपन्यास में नकारात्मक भूमिका निभाता है। दा साहब ''ईमानदार अफसरों को हतोत्साहित व चापलूस अफसरों को प्रोत्साहित करते है। सरकार की चापलूसी करने वाले डी.आई.जी. सिन्हा जैसे भ्रष्ट अधिकारी की प्रशंसा में कहते है – ''तुम्हारी रिपोर्ट भी देखी है मैंनें, मेहनत से तैयार की गई लगती है।''[2]

चापलूसी, पक्षपात जैसी प्रवृत्तियाँ आज भी राजनीतिक क्षेत्र में मौजूद है जो दा साहब के चरित्र में दिखाई देती है। राजनीति में अपराध की प्रवृत्ति बढ़ रही है इस पर मन्नू जी महाभोज में एक जगह लिखती है – ''राजनीति गुण्डागर्दी के निकट चली गई है। जिस देश में देवतुल्य राजनेताओं की परम्परा रही हो वहाँ राजनीति का ऐसा पतन''[3] ।

डॉ. गुलाब हाडे ने एक जगह लिखा है – ''राजनीति की अपनी महानता औदात्य तथा गंभीरता की आड़ में जो वास्तविक तस्वीर है वह छोटे–छोटे ब्योरे के माध्यम से उभारी गई है ताकि हम इस मुद्दे पर सोचे की देश के राजनीतिज्ञों का यह चरित्र कहा जाकर विराम लेगा।''[4]
वहीं विनोद सिंह लिखते हैं – ''हमारे देश में राजनीति सत्ता प्रतिष्ठानों पर आधिपत्य प्राप्त करने की राजनीति बन गई है।''[5]

उपन्यास में सुकुल बाबू एक भ्रष्ट और अवसरवादी राजनेता के रूप में सामने आते है। सुकुल बाबू के चरित्र का अंकन करते समय लेखिका ने मनोवैज्ञानिक सूझबूझ का परिचय दिया है। उनकी भाषण की क्षमता दा साहब से बेहतर है। सुकुल बाबू की भाषण तो पूरा नाटकीय रहता है वे मजे हुए वक्ता है इसलिए जनता के सवालों का जवाब बिना नाराज़ हुए देते है।

बिंदा महाभोज उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है। वह बिसू की मौत के बाद न्याय के लिए संघर्ष करता है। बिंदा उपन्यास में राजनीतिक व्यवस्था व सत्ता के दुरूपयोग पर सवाल उठाता है। वह यह दिखाने का प्रयास करता है कि कैसे सत्ता का दुरूपयोग करके गरीबो व दलितों का शोषण किया जाता है। बिसू की मौत के बाद वह बिसू के सपनों को साकार करने की कोशिश करता है पीड़ितो को न्याय दिलाने की कोशिश करता है। बिंदा उपन्यास में महत्वपूर्ण पात्र है जो न्याय, समानता व दलितो के अधिकारों के लिए संघर्ष का प्रतीक है।

उपन्यास ने जोरावर सरोहा गांव का प्रभावशाली नेता व जमींदार है जो दा साहब का सहयोगी है। वह राजनीति सह प्राप्त गुण्डा व हत्यारा है। जोरावर ही बिसू की हत्या के लिए जिम्मेदार व सक्सेना की रिपोर्ट में इसे हत्यारा घोषित किया। दा साहब का डी.आई.जी. द्वारा सक्सेना को सस्पेंड करवाना व जोरावर को निर्दोष साबित करवाने से स्पष्ट होता है कि राजनीति में व्याप्त शक्ति का दुरूपययोग साफ दिखाई देता है।

उपन्यास में दा साहब बिंदा को फंसा कर दुनिया के सुख और आराम फरमा रहे है वहीं उसकी तरफ बेकसूर बिंदा दर्द से कराह रहा है।

दत्ता साहब मशाल समाचार पत्र के सम्पादक है। वे समाचार पत्रों की कट्टर स्वाधीनता के पक्षधर है। लेकिन दा साहब उन्हें भी खरीद लेते है। दत्ता साहब के क्रियाकलापों के माध्यम से मीडिया के बदलते हुए स्वरूप को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।
सरकार से विज्ञापन प्राप्त करने, अखबारी कागज का कोटा बढ़ाने, जैसे प्रलोभनों में आकर मीडिया किस तरह बिकाऊ हो गया है, इसकी एक झलक लेखिका ने मशाल पत्र से सत्ताधारी दल के सम्बन्धों के माध्यम से दिखाई है।

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय राजनीति में मूल्यों का विलोपन हो गया। वैसे तो अलग–अलग पार्टिया व नेता होते है लेकिन सबके सब भ्रष्ट ही होते हैं। जिसे मनू भण्डारी ने त्रिलोचन के माध्यम से स्पष्ट करवाया है – ''क्या इसी परिवर्तन के लिए सुकुल बाबू की पार्टी और विधानसभा छोड़ी थी उन्होंने इसी क्रांति का सपना देखा था। .... नाम, चेहरे, लेबुल भले ही अलग–अलग हो पर अलगांव है कहाँ सुकुल बाबू .... दा साहब, राव चौधरी।[6]

उपन्यास में लेखिका ने राजनेताओं के पाखण्ड पूर्ण चरित्र को भी दिखाया है। दा साहब के कमरे की सजावट में गाँधी व नेहरू जी की तस्वीर लगी है। वे उन्हें अपना पथ–प्रदर्शक मानते हैं। गीता का उपदेश जीवन का मूलमंत्र मानते है। इस वर्णन को देखकर लगता है कि दा साहब उच्च सिद्धान्तों को मानने वाले सिद्ध पुरूष होंगे परन्तु ऐसा नहीं है। वे सिर्फ दिखावा करते है।

उपन्यास में राजनीति की बढ़ती मूल्यहीनता, सरकारों का जन–विरोध चरित्र, पुलिस की नेताओं से मिलीभगत, राजनेताओं द्वारा ईमानदार अफसरों को हतोत्साहित करना व चापलूस अफसरों को प्रोत्साहित करना, राजनीति में बढ़ता अपराधीकरण आदि विभिन्न समस्याओं पर लेखिका ने सूक्ष्म विवेचन किया है।

महाभोज के बारे में एक जगह मनू भण्डारी लिखती है – ''अपने व्यक्तिगत दुःख दर्द अंतर्द्वन्द्व या आंतरिक नाटक को देखना बहुत महत्वपूर्ण सुख और आपत्तिदायक तो मुझे भी लगता है मगर जब घर में आग लगी तो सिर्फ अन्तर्जगत में बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रासांगिक हास्यास्प्रद और किसी हद तक अश्लील होने लगता।''[7] उपन्यास में राजनैतिक स्तर पर नैतिक मूल्यों का ह्रास भी दिखाया है। आजकल के नेता जनता को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से धार्मिक पाखण्डों व अंधविश्वासों को बढ़ावा देते है। वे सिर्फ दिखावा मात्र करते हैं। उनके इस तरह के व्यवहार से समाज में नकारात्मकता हावी होती है। उपन्यास में दा साहब इसी प्रवृत्ति के राजनेता के रूप में सामने आते है।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पात्रों के चरित्र के माध्यम से मनू भंडारी ने अपने इस उपन्यास में भारतीय राजनीति की सच्चाई को उजागर किया है। इन्होंने यथार्थ चित्रण को महत्व दिया है।

लेखिका ने अपने समय की तत्कालिक राजनीति का चित्रण जो यर्थाथवादी चित्रण किया है वह आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। उपन्यास में पात्रों के माध्यम से राजनीति और अपराध के गठजोड़, भ्रष्टाचार और दलितों के प्रति अन्याय को दर्शाया गया है।

संदर्भ :

1. मनू भण्डारी – सम्पूर्ण उपन्यास (महाभोज) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 126.
2. मनू भण्डारी – सम्पूर्ण उपन्यास (महाभोज) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 151.
3. मनू भण्डारी – सम्पूर्ण उपन्यास (महाभोज) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 88.
4. डॉ. गुलाब हाड़े – मनू भण्डारी का कथा साहित्य, पृ.सं. 294.
5. डॉ. राम विनोद सिंह – आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ.सं. 165.
6. मनू भण्डारी – सम्पूर्ण उपन्यास (महाभोज) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 62.
7. मनू भण्डारी – सम्पूर्ण उपन्यास (महाभोज) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 295.